Shree Shivkrupanand Swami
Founder
Gurutattva

भगवान और मनुष्य में "अन्तर"

27-4-2021
पोर्णिमा

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -
परमात्मा एक विश्वव्यापी चेतना शक्ती होती है, और यह निराकार ही होती है। और वह समय2 पर विभीन्न माध्यमो से बहती है,
और यह प्रत्येक मनुष्य मे रहती ही है, जो भी शरीरधारी तो है। लेकीन संपुर्ण आत्मभाव मे जी रहा है, वह एकदम खाली "पाईप" जैसा होता है, जो स्वंयम कुछ नही करता लेकीन उसे "माध्यम" बनाकर अंसभव भी संभव हो सकता है, ऐसे मनुष्य "सिद्धगुरु" कहते है, यह साक्षात परमात्मा "माध्यम" ही होता है, इसे ही वर्तमान काल का "भगवान" मान सकते है, हम जिन्हे आज भगवान मानते है. वे भी अपने समय के सिद्धगुरु ही थे सामान्य मनुष्य भुतकाल मे जिता है, इसलीये उसे केवल भुतकाल के ही "माध्यम" की जानकारी होती है,

Gujarat Samarpan Ashram
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Office: +91 9898011555
Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

भगवान के बारे मे हमारी जो धारणा बनी है, वह गलत है, भगवान को कोई तकलीफ नही हो सकती भगवान को कोई परेशानी नही हो सकती भगवान के जिवनकाल मे कोई समस्या ही न आयी होगी लेकीन वास्तव मे यह "सत्य" नही है, जहाँ शरीर धारण किया तो शरीर के "दोष" शरीर के रिश्तेदारो से होने वाली परेशानीया जिवन मे आने वाली "समस्याऐं" यह सब एक सामान्य मनुष्य के समान उनके जिवन मे भी आयी और आती है, बस वे उन समस्याओ अपने भितर नही लेते और प्रत्येक परिस्थीती को खुशी से "स्विकार" कर लेते है, वे परीस्थीती ठीक करने के लीये "प्रार्थना" भी नही करते और वे करेगे तो किससे क्योकी वह स्वयम ही "भगवान" होते है, इनका जिवन आत्मा के अधीन होना है, यह तो "आत्मेश्वर" होते है, इसलीये आत्मा का गुण समभाव इनमे कुटकुट कर भरा होता है, यह अपने जिवनकाल मे इतना अधीक सकारात्मक कार्य करके जाते है, की इनके बाद इनके जिवन की समस्याओ की ओर किसी का ध्यान

ही नही जाता है, प्रायः इनके समाधीस्थ होने के ५०० साल बाद इनका चरीत्र लीखा जाता है, और जो लिखते है, उन्हे केवल और केवल उनका कार्य ही पता होता है, क्योकी उनके जिवन की समस्याऐ तकलीफे तो वही व्यकती बता सकता है, जो उनके जिवनकाल मे जिया हो और यही कारण है, की भगवान की समस्या भगवान की तकलीफे हम तक कभी पहुच ही नही पाती है,

<u>अरे बाबा</u> भगवान भी हाडमांस के ही इंन्सान थे उन्हे भी "<u>भावनाऐ</u>" थी उन्हे भी "कष्ट" थे उन्हे भी "समस्या" थी उनके जिवन मे लाख समस्याऐ हो उन्होने उसकी चर्चा कभी कीसी को नही की क्योकी उन्होने वह स्विकार कर ली थी जहाँ शरीर धारण कीया की यह सब बाते साथ मे आती ही है, लेकीन शरीर छुट जाने के बाद यह सब बाते भी छुट जाती है. बस रह जाता है. कार्य और भगवान को उसके कार्य से ही जाना जाता है,

सिद्धगुरु भगवान की अवस्था तो सर्कस मे
काम करने आये "जोकर" की तरह ही होती है,
जोकर का कार्य होता है, सभी को हंसाना-
सभी को खुश रखना। और लोग उसके पास
अपना दुःख: दर्द दुर करने आते है, इसलीये
जोकर को स्वंयम को कोई दुःखदर्द भी हो तो-
भी वह लोगो नही बताता है,
ठिक वैसा ही "सिद्धगुरु भगवान" भी शरीरधारी
ही उन्हे भी भावना है, उन्हे भी समस्यायें
उन्हे भी तकलीफे है. लेकीन उन्होने यह
शरीरधारण कीया है, लोगो की तकलीफें
दुर करने के लीये इसलीये वे केवल वही
कार्य करते है
ऐसे सिद्धगुरु साक्षात परमात्मा के "माध्यम"
होते है, और वे जन्म से ही देने के भाव
वाला शरीर ही ग्रहण करते है. वे जन्म
भर किसी से कुछ नही लेते केवल और
केवल देते ही रहते है, क्योंकी देना-
उनके आत्मा का शुद्धभाव होता है।

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

(5)

इनका शरीर तो सामान्य मनुष्य के जैसा ही होता लेकिन इनके सामान्य से दिखने वाले शरीर में एक 'शक्तीशाली आत्मा" होती है, और उस शक्तीशाली आत्मा का प्रभाव इनके समुचे शरीरभाव पर पडता है, यही कारण है, यह आत्मभाव में ही अपना सारा जिवन व्यतीत करते है,
इसी "शक्तीशाली आत्मा" के कारण ही लाखो आत्माएं इनकी आत्मा के साथ जुड जाती है, और जब यह समाधीस्थ होते है, तो शरीर का आवरण गिर जाता है, और आत्मा के दर्शन होने लग जाते है, और जब इनका सुक्ष्मशरीर क्रीयान्वीत होता है, तब कही सामान्य मनुष्य इन्हे जान पाते है,
आप सभी को खुब खुब आशिर्वाद

आपका अपना
बापास्वामी
27/4/2021